श्री कल्कि बाल वाटिका - मासिक पत्रिका

श्री कल्कि जी

गुरु हनुमान जी

माँ वैष्णो

गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी

अंक 10, कुल पृष्ठ 8

मूल्य : मात्र 10 रुपए

मास अगस्त 2013

महाराजा अग्रसेन की उदार जीविका शाकाहारी नीति से महालक्ष्मी साक्षात अग्रवालों की कुल देवी हैं

2

महालक्ष्मी अग्रोहा धाम में महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि जी के साथ विराजीं

महालक्ष्मी एवं भगवान श्री कल्कि की कृपा का प्रत्यक्ष प्रभाव विश्व का पहला श्री कल्कि संग्रहालय शीघ्र अग्रोहा में बनने की ओर

श्री कल्कि संग्रहालय में कार्यरत श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्य

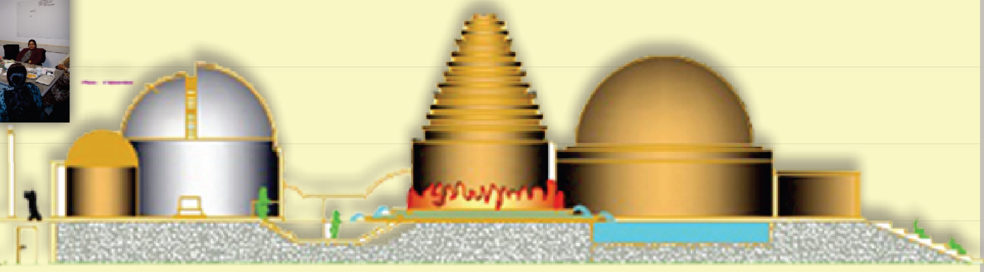

मात्र 4 महीने में माँ गंगा ने भगवान श्री कल्कि की 15 मूर्तियों की स्थापना करवाई

5

कर्म भूमि भारत में हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है

2

Join Kalki Group (Real)
Bhajans on soundcloud.com/kalkigroup-real

भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है

भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पंचम स्कंध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्मा के मानस पुत्र स्वयंभू मनु ने व्यवस्था संभाली। पहले भारतवर्ष का नाम ऋषभदेव के पिता नाभिराज के नाम अजनाभवर्ष प्रसिद्ध था। भरत के नाम से ही लोग अजनाभखंड को भारतवर्ष कहने लगे। यहाँ के वासी चारों वेद (अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं ऋगवेद), उपनिषदों, पुराणों देवी देवताओं को मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

भारतवर्ष वह स्थान है जो कर्मभूमि है जबकि विश्व के दूसरे राष्ट्र भोग भूमि की श्रेणी में आते हैं, यहाँ पूर्ण परात्पर परब्रह्म परमात्मा महाविष्णु धर्म की स्थापना के लिए हर युग में अवतरित होते हैं। महालक्ष्मी भी हर युग में उनके साथ आती हैं। त्रेता में श्रीराम के साथ सीता के रूप में द्वापर में श्रीकृष्ण के साथ राधा के रूप में और कलियुग में भगवान श्री कल्कि के साथ माँ पदमा के रूप में। भारतवर्ष का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। परंपरा, संस्कृति और ज्ञान की अद्भुत धरोहर हम भारतवासियों के पास है।

जब जीरो दिया मेरे भारत ने, दुनिया को
तब गिनती आई।
तारों की भाषा भारत ने दुनिया को
पहले सिखलाई।
देता न दशमलव भारत तो चांद पे जाना
मुश्किल था।
धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना
मुश्किल था।
सभ्यता यहाँ पहले आई- पहले जन्मी है यहाँ पे कला।
अपना भारत वो भारत है जिसके पीछे संसार चला।
संसार चला और आगे बढ़ा- यूँ आगे बढ़ा- बढ़ता ही
गया।
भगवान करे ये और बढ़े बढ़ता ही रहे और फूले फले
- आभार पूरब और पश्चिम चलचित्र

लेकिन डोडो पक्षी की तरह....... ऐ मेरे वतन के लोगों परमहंस हो जाओ (भारतवर्ष के लोग परमहंस हैं यहाँ आतंकवादी आएं या दूसरे हमलावर इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता)-यज्ञ शर्मा क्या परमहंस शब्दकोश में स्वाभिमान नाम का शब्द है कि हम गर्व से कहें कि हम हिंदू हैं हम हिंदूस्तानी है

देश गुलाम कैसे बनता है?

मैं भारत में काफी घूमा हूँ। दाएं, बाएं, इधर-उधर मैंने यह देश छान मारा और यहाँ मुझे एक भी भिखारी, एक भी चोर देखने को नहीं मिला।

यह देश इतना समृद्ध है और इसके नैतिक मूल्य इतने उच्च हैं और यहाँ के लोग इतनी सक्षमता और योग्यता लिए हुए हैं कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं यह मुझे नहीं लगा।

इस देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा इस देश की रीढ़ है और हमें यदि यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए इस देश की प्रार्थना, शिक्षा पद्धति और संस्कृति बदलनी ही पड़ेगी। भारतीय लोग यदि यह मानने लगें कि विदेशी (विशेषत: अंग्रेजों) जो हैं श्रेष्ठ हैं अपनी स्वयं की संस्कृति से भी ऊंची है तो वे अपना आत्मसम्मान गंवा बैंठेंगे और फिर वे वही बनेंगे जो हम चाहते हैं —एक गुलाम देश

2 फरवरी 1835 को ब्रिटेन की पार्लियामेंट में दिए गए लार्ड मैकाले के भाषण के कुछ अंश आभार : भारत स्वाभिमान ट्रस्ट फेस बुक

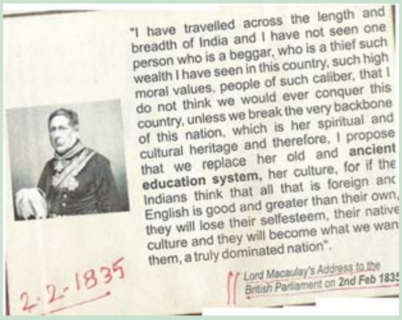
"I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient **education system,** her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation".

Lord Macaulay's Address to the British Parliament on 2nd Feb 1835

2-2-1835

गूगल से ली गई प्रतिलिपि
जिसमें लॉर्ड मैकाले की स्टेटमेंट छपी है

अमेरिकी शटडाऊन

आप जिनके घुटनों पर सिर रखकर सो रहे हैं

दुनिया की अकेली महाशक्ति अमेरिका के ज्यादातर केंद्रीय कर्मचारी आज से घर बैठने पर मजबूर होंगे। उनकी यह छुट्टी कब तक चलेगी इसके लिए उन्हें वेतन भत्ता मिलेगा या नहीं इन सवालों के जवाब अभी नहीं है। उन्होंने किसी अन्याय के विरोध में कोई हड़ताल नहीं की है। उनकी सरकार के पास उनको देने के लिए पैसे नहीं है इसलिए उन्हें छुट्टी पर भेजा गया है। अमेरिकी संसद के निचले सदन में विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी का बहुमत है, जो राष्ट्रपति बराक ओबामा के हेल्थ केयर प्रोग्राम से सहमत नहीं है उसकी साफ राय है कि सरकार चलाने के लिए जरूरी रकम जारी करने को लेकर वह तभी राजी हो सकती है जब सत्तारूढ़ दल इस प्रोग्राम में उसकी मर्जी के बदलाव करने के लिए तैयार हो। किसी बाहरी व्यक्ति को यह सरकार की जिद लग सकती है कि विपक्ष की राय के सामने वह थोड़ा झुकने को तैयार क्यों नहीं हो जाती। लेकिन हकीकत कुछ और ही है। पिछले राष्ट्रपति चुनाव में ओबामा हेल्थकेयर नाम से चर्चित प्रोग्राम बहस का मुद्दा बना हुआ था। इस टकराव का ही यह नतीजा है कि आज अमेरिकी सरकार के पास सिर्फ अपनी फौज, एयर ट्रैफिक कंट्रोल और बाहर से आने वालों की सुरक्षा जांच जैसे बुनियादी महत्व के विभागों को छोड़कर और किसी भी विभाग को देने के लिए कुछ भी नहीं है। —आभार : नवभारत टाइम्स

महाराजा अग्रसेन की उदार जीविका शाकाहारी नीति से महालक्ष्मी साक्षात अग्रवालों की कुल देवी हैं

27 एकड़ में फैली इस अग्रोहा नगरी को अग्रवाल समाज के संस्थापक महाराजा अग्रसेन ने बसाया था। इन्हीं **महाराजा अग्रसेन जी के 18 पुत्रों के नाम पर हमारे यहाँ 18 गोत्र मान्य हैं।** श्री अग्रसेन ने अपनी राज्य की सीमाओं का विस्तार करने व दान करने से भी श्रेष्ठ कृत्य (कार्य/काम) दूसरों की जीविका का प्रबन्ध करना समझा। अत: क्षत्रिय धर्म त्याग कर उन्होंने वैश्य (बनिया/जो काम बनाए) धर्म, वर्ण अपनाया।

भारतवर्ष की ही नहीं विश्व की जातियों में अग्रवालों का स्थान बहुत महत्तवपूर्ण है। इसके बहुसंख्यक व्यक्ति वर्तमान में करोड़ों की संख्या में कृषि-शिक्षा-चिकित्सा-व्यापार-तकनीकी संस्थानों में ख्याति प्राप्त हैं एवं निरंतर अर्जित कर रहे हैं। एक ईंट व एक रुपये के सिद्धांत से (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र में) वैश्य समाज (जन्म व कर्म से) को मांसाहारी से शाकाहारी बनाया। **इनके राज्य में मांसाहार निषेध था। जिससे प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने उन्हें आर्शीवाद दिया कि उनके कुल (अग्रवालों के 18 गोत्रों) पर उनकी (महालक्ष्मी) सदैव कृपा बनी रहेगी।** इसलिये वह अग्रवालों (वैश्य समाज)की कुल देवी कहलाईं।

17 जुलाई 2013 को अग्रोहाधाम में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हुई।

जब कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि की ढाई फुट की छोटी मूर्ति इस प्रांगण में लगवाने की चाहत लिए एक कल्कि भक्त वहाँ महालक्ष्मी के समक्ष पहुंचा तो उसी रात स्वप्नानुभव में प्रभु श्री कल्कि ने उसे कहा कि **अग्रोहा धाम मेरा अदभुत मंदिर होगा।**

वहीं महाराजा अग्रसेन व उनकी कुलदेवी महालक्ष्मी के समीप महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की साढ़े पाँच फुट की मूर्ति की स्थापना पदमा जी, रमा जी, हनुमान जी व आद्याशक्ति माँ दुर्गा एवं रामावतार से उनके ध्यान में मग्न माँ वैष्णो सहित संपन्न हुई।

इस भव्य प्रांगण के निर्माण में महालक्ष्मी की अदभुत कृपा एवं प्रसन्नता का स्वप्नानुभव हुआ—

यहाँ सीढ़ी पर बैठी माँ लक्ष्मी को जब नाखून से आटा निकालते हुए सुकून मिला

महालक्ष्मी रूप में विराजीं मैया ने कल्कि भक्तों को अपने होने का आभास करवाया

12 जुलाई 2013 की सुबह सिरसा निवासी कल्कि भक्ता सुश्री सुनीता बंसल को स्वप्नानुभव में महालक्ष्मी मंदिर में ऊपर की सीढ़ी पर माँ बैठी हुईं दिखाई दीं (यह वही स्थान है जहाँ क्रेन से प्रभु श्री कल्कि की साढ़े पाँच फुट की मूर्ति की पेटी उठा कर 10 जुलाई 2013 को रखी गई थी) महालक्ष्मी सुनीता रातुसरिया (श्री कल्कि बाल वाटिका सिरसा की संरक्षिका) के पति श्री विमल रातुसरिया से कहती हैं **विमल तू मेरे नाखून में फंसे सूखे आटे व मैल को निकाल दे।** विमल भईया ने उसे सुई से निकालना शुरू किया तो दृष्टा (सुनीता बंसल) कहती हैं कि भइया, धीरे निकालो माँ को कष्ट होता है इस पर महालक्ष्मी जी झल्ला कर कहती हैं **तू चुप कर! इसके निकालने से मुझे सुकून मिल रहा है।**

अर्थ : अग्रोहा धाम में लक्ष्मी जी नहीं महालक्ष्मी जी प्रतिष्ठित हैं। इन्हीं महालक्ष्मी ने महाराजा अग्रसेन को संपूर्ण राष्ट्र को शाकाहारीबनाने व दूसरों की जीविका का प्रबंध करने पर प्रसन्न होकर (माँ वैष्णो जो त्रिकुटा पर्वत पर बैठी हैं की तरह) यह वरदान दिया था कि तेरे कुल में हमेशा मेरा वास रहेगा। तब से महाराजा अग्रसेन ने महालक्ष्मी जी की पूजा अपनी कुलदेवी के रूप में शुरू की। दीपावली पर समस्त वैश्य समाज, व्यापारी वर्ग महालक्ष्मी की तन मन धन से पूजा करते हैं। अपने वायदे के अनुसार आज भी लेकिन अपने पति (महाविष्णु जो कलियुग में कल्कि रूप में आए हैं) के बिना वह वैश्य कुलों को धन धान्य से पल्लवित कर रही हैं। जब 10 जुलाई 2013 को महाविष्णु के अवतार भगवान श्री कल्कि की मूर्ति प्रतिष्ठित होने को वहाँ पहुँची तो मां खुशी से गद्‌गद् हो गईं। अपने नाखूनों से सूखा आटा और मैल निकलवाने का अर्थ है कि बहुत समय हो गया वैश्य समाज की सेवा करते हुए। अब मेरे स्वामी महाविष्णु के अवतार श्री कल्कि यहाँ आ गए हैं। अब मुझे सुकून (चैन) मिलेगा (जिन्हें विमल भैया ला रहे हैं जो सिरसा से इसमें कार्यरत हैं) अब केवल वैश्य समाज ही नहीं जो भी महाविष्णु एवं महालक्ष्मी जी को जो जितना मानेगा वह उतना ही धन धान्य धर्म वैभव से उसे फल देंगे।

कल्कि जी की मूर्ति स्थापना की पूजा के दौरान महालक्ष्मी की संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से कल्कि भक्तों ने महसूस की।

मूर्ति स्थापना के दौरान हुए स्वप्नानुभव से मार्गदर्शन मिला

महाविष्णु के अवतारी भगवान श्री कल्कि की सहपरिवार मूर्ति पूजा आचार्य प्रभाकर शास्त्री जी ने अपने सहयोगियों के साथ शुरू करवाई। उसी रात स्वप्नानुभव में प्रमुख यजमान श्री विमल रातुसरिया की धर्मपत्नी **सुश्री सुनीता रातुसरिया को महालक्ष्मी ने कहा मेरे स्थान पर बैठकर सबने पूजा तो की लेकिन मेरी पूजा नहीं की।**

18 जुलाई को आचार्य प्रभाकर शास्त्री ने पूजा शुरू करवाई तो उन्हें मामाजी ने यह स्वप्नानुभव सुनाया। इस पर आचार्य जी ने गर्म शब्दों में दुर्गा जी के चित्र की तरफ इशारा करते हुए कहा ऐसा हो ही नहीं सकता मैंने सबकी पूजा करवाई है।
इस पर मामाजी ने मीठे शब्दों में कहा कि आचार्य जी आप विचार कीजिए कल्कि भगवान द्वारा दिए अनुभव गलत नहीं होते हैं। तीन चार मिनट बाद आचार्य जी ने पूजा में बैठे सभी जोड़ों के समक्ष मामाजी को संबोधित करते हुए कहा कि महालक्ष्मी की पूजा करवानी रह गई। मैं अभी पहले उनकी पूजा करवा देता हूँ। हम सभी महालक्ष्मी जी से मात्र सौ गज की दूरी पर मूर्ति स्थापना की तीन दिवसीय पूजा कर रहे थे। इस पर मामाजी ने मीठे शब्दों में आचार्य जी से कहा कि आप हमारी तरफ से यहाँ पर और सामने माँ के दरबार में हम सबको ले चलकर संस्कृत के श्लोकों से क्षमायाचना एवं पूजा करवा दीजिए। हम आचार्य प्रभाकर जी के आभारी हैं कि उन्होंने ऐसा करवा दिया। 21 जुलाई तक चला कल्कि महोत्सव निर्विघ्न संपन्न हुआ।

शास्त्री प्रभाकर मिश्रा
श्री यमुना जी भवन
गौरी शंकर मंदिर
चांदनी चौंक दिल्ली
(09871815989)

मूर्ति स्थापना से मिले तेज से जब शरीर में कंपन हुआ

17 जुलाई बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा के दिन हवन के बाद जब प्रभाकर शास्त्री जी ने भगवान श्री कल्कि जी की आंखो से पट्टी खोलकर उनकी आंखो की तरफ देखा तो उसमें से ऐसा प्रखर तेज निकला जिसे उनका शरीर व आत्मा सहन नहीं कर पाए उनके अनुसार यह पहली बार (अनेक मूर्ति पूजाओं में से) वह वहाँ पर कंपकंपाए। इसके बाद जब उन्होंने वहाँ पर श्री कल्कि के परम भक्त श्री हनुमान जी की आँखों पर से पट्टी खोली और उनकी आँख से आँख मिलाई तो उससे निकले तेज से उनका शरीर एकदम लड़खड़ा गया। अग्रोहा धाम में आने वाले सभी भक्तों से हमारा अनुरोध है कि आप माँ लक्ष्मी के दरबार मे अपने अग्रवाल समाज के वंशज होने के गौरव से बंधे अपनी झोली भरने आए हैं तो एक बार अपनी कुल देवी महालक्ष्मी माँ की प्रसन्नता के लिए आज कलियुग के युगावतार भगवान श्री कल्कि के अग्रोहा धाम में विश्व में पहली बार बनने जा रहे संग्रहालय की सफलता की कामना करें और भागयशाली से महाभाग्यशाली बनें।

ग्यारह कुंडीय हवन नोएडा बाल वाटिका में

साथियों, नोएडा बाल वाटिका की संचालिका सुश्री मुक्ता शर्मा ने ग्रीन पार्क बाल वाटिका में आयोजित 50 कुंडीय यज्ञ से प्रेरित होकर नोएडा बाल वाटिका में 11 कुंडीय यज्ञ बच्चों के परिवार सहित करने का आवाहन किया है। हम आपको आमंत्रित करते हैं इस 11 कुंडीय यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए। इच्छुक सदस्य निम्नलिखित नंबर पर संपर्क कर सकते हैं—सुश्री मुक्ता शर्मा-09811134378
सुश्री मेघना गोयल-9136377829

13 अक्टूबर 2013 को ग्रीन पार्क श्री कल्कि बाल वाटिका में कुंडीय यज्ञ

बच्चों के साथ माताओं व भाई बहिनों का/बच्चों को हवन कराने-सिखाने के लिए आवाहन

ग्रीन पार्क, शिव मंदिर के ब्लॉक में पिछले मास की भांति बाल वाटिका में प्रत्येक बच्चे को अलग से पूजा के सामान के साथ हवन कुंड दिया जाएगा जिसमें उनके साथ उनकी माता, भाई-बहिन सम्मिलित होकर बताए तरीके से हवन करेंगे और घरों पर कराएंगे। सुश्री राज गोयल, सुश्री रेनू बंसल, सुश्री कनिका मोदी, सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल, सुश्री इंदू बंसल बच्चों को हवन का महत्व बताएंगी और कराएंगी।

हवन सामग्री

पूजा सामग्री के बैग में जो बिना सत (चिकनाई) निकली विशुद्ध जड़ी बूटियों से बनी हवन सामग्री की लागत 230 रु प्रति कि.ग्रा. आई है। क्योंकि भगवान को पाने के लिए हवन अत्यंत सक्षम है। अत: हम 200 रु प्रति कि.ग्रा. की कीमत पर यह हवन सामग्री उपलब्ध करवा रहे हैं।

विशेष : इस हवन सामग्री से हवन करने के उपरांत घर का वातावरण दिन भर महकता है।

प्राप्ति स्थान : 1903, चाँदनी चौक, पहली मंजिल
गुरुद्वारा शीशगंज के सामने, दिल्ली-6, 23866661 23866646

मात्र 4 महीने में माँ गंगा ने भगवान श्री कल्कि की 15 मूर्तियों की स्थापना करवाई

1. विंध्याचल, मिर्जापुर — 13 मई 2013
2. अन्न क्षेत्र कांशी — 12 मई 2013
3. दशाश्वमेध घाट, बड़ी सीतला माँ — 13 मई 2013
4. शोवा बाजार कोलकाता — 29 अप्रैल 2013
5. रोहिणी सैक्टर-7 — 16 मई 2013
6. मुक्तेश्वर, नैनीताल — 29 अप्रैल 2013
7. असरोही, यू.पी. — 2 अप्रैल 2013
8. बहादुरगढ़, हरियाणा — 14 अप्रैल 2013
9. घंटाघर, सब्जी मंडी — दिल्ली 13 अप्रैल
10. ग्रीन पार्क, नई दिल्ली — 10 जुलाई 2013
11. सिरसा, हरियाणा — 10 जुलाई 2013
12. छिपीवाड़ा चांदनी चौक — 14 जुलाई 2013
13. गगन विहार, दिल्ली — 7 जुलाई 2013
14. विंध्याचल, कांशी — 19 जुलाई 2013
15. अग्रोहा धाम, हिसार — 17 जुलाई 2013

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना आश्चर्यजनक किंतु सत्य

एक रुपए से 99 रुपए बनाने का सरल तरीका

अब तक रुपया पाने के लिए आप परेशान होते थे, अब रुपया देने के लिए कल्कि जी परेशान। प्रिय कल्कि भक्त, धर्म के लिए रुपया शुभ के डिब्बे में से लीजिए, कम पड़ने पर इसे उधार अपने 99 रुपयों में से दे दीजिए। फिर स्वप्नानुभव एवं उनके उपचारों द्वारा इसे भरता हुआ देखें।

कल्कि जी के शुभ का खजाना

20 अक्टूबर 2013 को आओ चलें संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान में

20 अक्टूबर 2013 को श्री चंद्रेश्वर महादेव पर तीनों पुष्कर (ज्येष्ठ, मध्यम एवं कनिष्ठ) तीर्थ के निमित्त श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ होगा।

जब शैतानी शक्तियाँ कलह और परेशानियों के चक्रव्यूह में फ़ंसा दे

जब शैतानी शक्तियाँ कलह और परेशानियों के ऐसे चक्रव्यूह में हमें फ़ंसा दे कि निकलने का रास्ता ही दिखाई न दे तो 5 रुपये के सिक्के के साथ तरबूज के 2 टुकड़ों का संकल्प प्रभावशाली होता है।

प्रार्थना: मैं यह तरबूज 5 रूपये के सिक्के के साथ बलि स्वरूप 2 टुकड़े करके आपको अर्पण कर रही हूँ, इसे स्वीकार करें। कलियुग की जो भी अघोरी, दुराचारी, प्रेत, अतृप्त, पैशाचिक, तांत्रिक, विषैली, कुटिल, शैतानी शक्तियाँ अपने शैतानी चक्रव्यूह में फँसाकर हमें तबाह और बर्बाद करना चाहती हैं, हमारी सुख-शांति और समृद्धि नष्ट करना चाहती हैं, किसी भी तरह की दुर्धटना से शारिरिक क्षति पहुँचाना चाहती हैं या प्राण लेना चाहती हैं, मानसिक रूप से मुझे विक्षिप्त करना चाहती हैं, मुझे और मेरे परिवार को किसी भयानक विपत्ति या संकट में फँसाना चाहती हैं, इस संकल्प के द्वारा हे मां, उन शक्तियों को उनका भाग देकर तृप्त और संतुष्ट करो, उनके लोकों में उन्हें वापस भेजो या मेरी तरफ से उनका दमन करते हुए उनके लोकों पर उनके सभी दैहिक, दैविक, भौतिक, शारिरिक और मानसिक प्रहारों से हमारी रक्षा करो। संकट और विपत्ति का जो भी बवण्डर है उससे हमारी रक्षा करो, मुझे अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ सुखी भाव से वैभवता पूर्वक रहते हुए कल्कि जी के प्रचार का संपूर्ण काम करना है।

भगवान श्री कल्कि की रामलीला में सवारी 5 अक्टूबर से 15 अक्टूबर, 2013 तक
कृष्ण अवतार की माखन लीला कल्कि अवतार में बनी स्वप्न वाणी जागृत अनुभव लीला

भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा बड़ी रामलीला (आसफ अली रोड, रामलीला ग्राउन्ड) में 11 दिन होती है। इनके द्वारा बड़े पैमाने पर दोपहर व रात में (प्रतिदिन दो बार) सवारी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से निकलती है एवं छोटी रामलीला (परेड ग्राउण्ड वाली) जिनमें आठ से दस लाख भक्त सपरिवार भगवान के विभिन्न सुंदर रूपों के दर्शन करते हैं। श्री कल्कि बाल वाटिका (रामलीला सवारी प्रभारी) श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) के तत्वाधान में प्रतिवर्ष की भाँति 5 अक्टूबर से 13 अक्टूबर, 2013 तक निकालने का प्रोग्राम है।

रथं कल्कि दृष्टवा पुनर्जन्म न विद्यते (रथ पर सवार भगवान कल्कि के दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता)

सुर वृन्द नमित पद कंज द्वन्द, दर्शन से कट रहे यम के फन्द

(भगवान श्री कल्कि के दोनों चरण कमल के समान हैं जिनको देवता भी प्रणाम करते हैं क्योंकि उनके दर्शन मात्र से यमराज के फन्दे कट जाते हैं।)

है कोटि जन्म अधराशि नाश, कर रहे अधि-हृदि तिमिर ह्रास

(भगवान श्री कल्कि की झांकी का दर्शन करोड़ों जन्म के इकट्ठे पापों को भस्म कर देता है तथा हृदय के अंधकार को दूर कर देताहै।)

इस शोभा यात्रा की व्यवस्था के लिए निम्नलिखित मदों में अनुमानित न्यौछावर—

1. बड़ी रामलीला शुल्क 5,100.00
2. छोटी रामलीला शुल्क 3,500.00
3. ट्रक-ट्राली किराया................................. 25,000.00
4. बिजली का जनरेटर किराया...................................... 7,100.00
5. श्री कल्कि भगवान का साहित्य वितरण 6,900.00
6. दैनिक श्रमिक व अन्य खर्च प्रतिदिन 2,500.00
7. फूलों की झांकी प्रतिदिन............................. 5,300.00
8. श्री कल्कि भगवान का प्रसाद वितरण प्रतिदिन 1,800.00
9. श्री कल्कि भगवान का शृंगार 12 दिन (आर्टिस्ट द्वारा मेकअप)................3,500.00

आपका सपरिवार भगवान का दर्शन हमारे लिए सहयोग से भी ज्यादा अमूल्य होगा।

आप अपना सहयोग उपरोक्त सत्कार्यों में किसी एक मद में पूरा या हिस्से में देना चाहें तो आपके नाम से अथवा गुप्त सहर्ष स्वीकार करके उसी मद में लगाया जाएगा। श्री कल्कि बाल वाटिका के परिवार वाले सदस्य एवम् बालक दस वर्ष से बड़े, झाँकी पर स्वरूपों में यदि भाग लेना चाहते हैं तो नि:संकोच श्री रोहित गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले) से संपर्क कर सकते हैं। आप अपना बहुमूल्य सहयोग रामलीला सवारी प्रभार समिति के किसी भी सदस्य को भेज सकते हैं या नीचे दिये फोन पर बता सकते हैं।

श्रीयोगेश गुप्ता 23973383 | **श्री हितेश गुप्ता (सुपुत्र बैकुंठवासी श्री विनोद गुप्ता, हाथी दांतवाले)** 9899499848 | **श्री आदर्श सिंघल** 9818525601

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 5 अक्टूबर 2013 एवं 2 नवंबर 2013

स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2

दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)

संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : शनिवार 19 अक्टूबर 2013 एवं 9 नवंबर 2013

स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट*

पटपड़गंज दिल्ली-92

समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक

संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)

संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

साहित्यिक-सत्संग प्रति सप्ताह बुधवार

यूँ न गिरना कि गिर के संभल न सको,
अपनी ही भूल पर फूल फल न सको।
बात सुन लीजिए मत उफन जाइए,
कल्कि भगवान के भक्त बन जाइए।
बिनु सत्संग विवेक न होई-

स्थान : 1903, चांदनी चौक, दिल्ली-6

समय : दोपहर 2 बजे से 6 बजे तक

कभी भी आएं कभी भी जाएं

छिद्धयन्ति हृदय संशय ग्रंथियां अर्थात् सत्संग से हृदय में पड़ी संशय की गांठे खुलने लगती हैं।

** यदि आप अपनी परेशानियों को गुप्त रखना चाहें तो हमें लिखा हुआ दें तो हम लिखित में जवाब देंगे। आप अगर अनुभव ला रहे हैं तो कृप्या लिख कर लाएं, सत्संग गोष्ठी में अनुभव का जवाब नहीं दिया जाएगा। उसका जवाब आपको बाद में अनुभव गोष्ठी में मिलेगा अथवा पोस्ट द्वारा भेजा जाएगा।*

माला के तेज को रोकने और फल के लिए

जितनी देर माला करें उससे पहले या बाद में श्री कल्कि साहित्य का पाठ अवश्य करें।

श्री गुरु जी की टू इन वन-कल्याण अक्टूबर अंक

श्री कल्कि बाल वाटिका त्रिमासिक प्रशिक्षण शिविर

—सुश्री रमणी अग्रवाल प्रोजेक्ट प्रभारी (जर्मन टीचर, जी.डी गोयनका)

22 सितंबर 2013 के लिए प्रशिक्षण शिविर में सुश्री रमणी को आए स्वप्नानुभवों के चित्र प्रस्तुतिकरण

आकाश मार्ग से पनडुब्बी से उतरते चाणक्य

पनडुब्बी की तरफ से उतरकर मेरी और बच्चों की तरफ आते हुए चाणक्य

चाणक्य मुझसे कह रहे हैं कि तुम बच्चों को ऐसे सिखाओ— हे कल्कि जी मुझे आपकी कृपा से सब मिला है।

प्रिय भक्तों जैसा कि आपको बार-बार अल्प सत्संग या टेलीफोन पर मामाजी ने बताया कि कल्कि भगवान का नाम वह भक्त तुरंत पकड़ लेते हैं जिन्होंने किसी न किसी अवतार में भगवान के साथ कार्य किया है। ऐसे भक्त जब भगवान कल्कि का नाम लेना शुरू करते हैं तो **उनकी प्रगति तीव्र गति से होने लगती है** और वह आम आदमी (सिविलियन) से हटकर **मिल्ट्री की रैंक में आ जाता है** अर्थात् अगर कोई सिविलियन किसी दुश्मन को मारता है तो उसे कानूनन मृत्यु दंड मिलता है लेकिन मिल्ट्री मैन सीमा पर जितने ज्यादा दुश्मनों को मारता है तो उसे तमगा (मैडल) मिलता है।

अत: जब मनुष्य कल्कि नाम से जुड़ता है और नाम जाप उपचारों से आगे बढ़ता है तब वह यह मान बैठता है कि यह तो उसके साथ होना ही था और अब उसके पास सब कुछ ऐसे ही बना रहेगा। लेकिन मामाजी के बार-बार समझाने पर कि ऐसी स्थिति हमेशा नहीं बनी रहेगी। आगे चलकर उन्हें स्वप्नअनुभव व उपचारों में भी श्रद्धा कम हो जाती है। फिर वह मामाजी की भाषा में कुछ लुढ़के हुए भक्तों की तरह कहने लगते हैं कि इन उपचारों से कुछ नहीं होता हमें जो मिला है यह तो हमारे भाग्य में पहले से ही था व रहेगा।

दोस्तों, जब उन्हें झटके लगते हैं तब एक माँ की तरह साथी की तरह, दोस्त की तरह मामाजी **पिछली बातों को याद न रखते हुए** उन्हें कलियुग के थपेड़ों से बचाने की चेष्टा करते हैं बाकी फिर तो उन पर, कलियुग पर और कल्कि जी पर निर्भर करता है।

ऐसा ही केस आपके सामने कोलकाता के वरूण चौधरी का मामाजी ने पहले आपको बताया था। उनको बचाने के लिए मामाजी ने उन्हें संभल महात्तम का प्रोजेक्ट दिया। संभल महात्तम के चलते-चलते ही उन्होंने स्वप्न अनुभव उपचारों द्वारा कई अच्छे काम किए। इससे कल्कि जी को प्रगट होने में सहायता मिलेगी। उन्होंने ही संभल महात्तम के दौरान कोलकाता से श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका छापनी शुरू की। मूर्ति स्थापना, गंगा सागर पर स्टॉल लगाया। इसी प्रकार मैंने भी (रमणी अग्रवाल) कलियुग के झटकों से उभरने के लिए ऊँचाइयों पर बने रहने के लिए मामाजी ने मुझे आए हुए स्वप्नानुभवों के आधार पर त्रिमासिक कल्कि बाल वाटिका प्रशिक्षण शिविर शुरू करने का बीड़ा उठाने के लिए प्ररित किया है। कृ प्या मुझे सहयोग दें।

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी आए प्रतिदिन बदलाव।

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

कामना करें कल्कि जी की मूर्तियां शक्तिपीठ-सिद्धपीठ-गांधी नगर दिल्ली-गोलू देव, नैनीताल- कांशी विश्वनाथ- यू.पी. साहिबाबाद में शीघ्र लगें।

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

आभारी हूँ भगवान श्री कल्कि कि आपने पल्लिवित पुष्पित होते हुए कल्कि भक्तों का मुझ अक्षम को सहारा दिया

—मामाजी

अग्रोहा धाम में 15 सितंबर 2013 को श्री कल्कि भक्त प्रभु श्री कल्कि की दिव्य छवि निहारते हुए

15 सितंबर 2013 को मामाजी आपने साथियों के साथ बैजनाथ धाम में भोले बाबा-माँ पार्वती की पूजा करने के बाद निरीक्षण-परीक्षण करते हुए

दिव्य चैनल द्वारा भगवान श्री कल्कि की आरती की शूटिंग के दौरान श्री कल्कि भक्त 15.9.2013

अग्रोहा धाम में 15 सितंबर 2013 को कुमार अंकित गड़ौदिया एवं कुमार हर्षित गुप्ता के साथ

बैजनाथ धाम में 4-5 घंटे लाइन में न लगना हो तो पहले एप्लीकेशन फॉर्म भर कर 500 रु में वी.आइ.पी. पर्ची (चित्र में दिखाई) मिलती है।

भगवान श्री कल्कि जी-पदमाजी-रमाजी-श्री हनुमान जी-श्री दुर्गा जी- माँ वैष्णवी को चांदी के मुकुट पहनाने के बाद श्री कल्कि दरबार की अदभुत छटा देखते ही बनती है

श्री कल्कि बाल वाटिका कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	20 अक्टूबर
पटपड़गंज	20 अक्टूबर
यमुना विहार	13 अक्टूबर
पंजाबी बाग	27 अक्टूबर
गगन विहार	13 अक्टूबर
महावीर नगर	20 अक्टूबर
मॉडल बस्ती	6 अक्टूबर
नोएडा-कुंडीय यज्ञ	13 अक्टूबर
ग्रीन पार्क-कुंडीय यज्ञ	13 अक्टूबर

श्री कल्कि बाल वाटिका

चाँदनी चौक ❖ कसेरू वालान, पहाड़गंज ❖ पालनपुर ❖ देहरादून ❖ असरोही ❖ कोलकाता ❖ चेन्नई
1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661
हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079
सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035
कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440
जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560
2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)
आभार/Ack. : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स
योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु
Regd. Office : 1903, 1st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel.: 23973383

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका
के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—
☎9312533445, 9968066625, 9968314876
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 120/- रुपए मात्र

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो
मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया, अक्षय गड़ौदिया-9999885277

Regd. Office : 1903, 1st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel.: 23973383